

यात्रा साहित्य वृत्तांत एवं राजनीति का अध्ययन

Kusum Lata^{1*}, Dr. Soniya Yadav²

¹ Research Scholar, Sunrise University

² Assistant Professor, Sunrise University

सार - यह अध्ययन यात्रा साहित्य वृत्तांत एवं राजनीति का अध्ययन है मनुष्य जीवन जीता है और उस जीवन से प्राप्त अनुभूतियों एवं अनुभवों को वे अपने सृजनशील व्यक्तित्व से नई भंगिमा देकर साहित्य के रूप में परिलक्षित करता है। यात्रा-साहित्य एक गंभीर विधा है। रोमांचपूर्ण अनुभवों का यथार्थ रेखांकन, देशों की राज्य व्यवस्था और राजनीति का अंकन, धार्मिक-ऐतिहासिक स्थानों का चित्रण यात्रा-साहित्य में मिलता है। यात्रा-साहित्य के निम्नलिखित तत्व माने जा सकते हैं - रचनाकार का व्यक्तित्व, विषय वस्तु, भाषा-शैली और उद्देश्य का अध्ययन है राजनीति में दल का महत्व बहुत बड़ा है। हिन्दी की स्त्री यात्रियों ने कुछ-कुछ ऐसे दलों एवं उसकी स्थिति पर अपने यात्रा साहित्य में प्रकाश डाला है।

मुख्यशब्द - यात्रा साहित्य, राजनीति

-----X-----

प्रस्तावना

मानव प्रकृति व सौंदर्य का प्रेमी है। वह साहित्य की भांति घुमकड स्वभाव का है, जहां भी जाता है वहां से साहित्य की भांति कुछ-न-कुछ ग्रहण करता है। उसके द्वारा ग्रहण किये गये प्रेम, सौंदर्य, भाषा, स्मृति आदि को अपने शुद्ध मनोभावों से प्रकट करता है।

जो साहित्य में समाहित होकर एक नई विधा का रूप ले लेता है। यात्रा का मानव जीवन से गहरा संबन्ध है। दरअसल जीवन ही एक यात्रा है। जन्म से उसकी यात्रा प्रारंभ होती है, मध्य जीवन में जिजीविषा के लिए काफी भागदौड़ करता है और अंत में स्वर्ग यात्रा भले ही यह यात्रा विविध प्रकार की हो, उसके माध्यम भिन्न हो, वह जन्दिगी भर यात्रा करता रहता है। मनुष्य के भौतिक और आत्मिक विकास के साथ यात्रा का गहरा और अटूट संबन्ध है। आदि मानव से आधुनिक मानव बनने में यात्रा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। "मनुष्य जातियों का इतिहास उनकी यायावरी प्रवृत्ति से संबद्ध है। संभवतः यह मानव की एक मूल प्रवृत्ति है। श्वरैवेतीश् अर्थात् चलते रहो उसके विकास का मूल मंत्र बन गया।

यात्रा-साहित्य का उद्देश्य रू यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। हम अगर मानव इतिहास पर नजर

डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने जीवन काल में हर आदमी कभी-न-कभी कोई-न-कोई यात्रा अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा-साहित्य की रचना करने में सक्षम हो पाते हैं। यात्रा-साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है। इन स्थानों की प्राकृतिक विशिष्टता, सामाजिक संरचना, सामाज के विविध वर्गों के सह-संबंध, वहाँ की भाषा, संस्कृति और सोच की जानकारी भी इस साहित्य से प्राप्त होती है।

यात्रा: शब्द की व्युत्पत्ति और परिभाषाएँ

सामान्यतः एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की प्रक्रिया को हम 'यात्रा' कहते हैं। यात्रा शब्द की व्युत्पत्ति श्याश् धातु (जाना) से हुई जिसमें श्चट्प्रत्यय लगाकर 'यात्राश् स्त्रीलिंग शब्द बना है। श्च श्यात्राश् शब्द को विभिन्न विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषित किया है। हिन्दी विश्व कोश में डॉ. नगेन्द्रनाथ बसु ने लिखा है - श्विजय की इच्छा से कहीं जाना, चढाई, पर्यटन, व्रज्या, अभिनिर्याण, प्रस्थान, गमन, दर्शनार्थ देवस्थानों को जाना, तीर्थाटन।

आधुनिक शब्द कोश में यात्राश् का अर्थ इस प्रकार दिया गया है- “प्रयाण, गमन, तीर्थस्थानों का भक्तिभाव से ग्रहण, पर्यटन, वृज्या, तीर्थाटन, सफर, घुमक्कड़ी। आचार्य रामचन्द्र वर्मा यात्रा की परिभाषा यों दी है , “एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया , सफर ।

दूसरा धार्मिक उद्देश्य या भक्ति से पवित्र स्थान पर दर्शन पूजा आदि के लिए जाना होता है। इन परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि पुराने समय में यात्रा से मूलरूप से तीर्थयात्रा का संकेत मिलता था। समय के साथ ‘यात्राश् शब्द के अर्थ में भी विस्तार हुआ है। आधुनिक काल में श्यात्राश् से श्पर्यटनश् का श्ज्वनतश् का संकेत मिलता है।

यात्रा-साहित्य: स्वरूप एवं परिभाषा

मनुष्य जीवन जीता है और उस जीवन से प्राप्त अनुभूतियों एवं अनुभवों को वे अपने सृजनशील व्यक्तित्व से नई भंगिमा देकर साहित्य के रूप में परिलक्षित करता है। साहित्यकार के जीवन पर प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति साहित्य कहलाता है। साहित्य की अभिव्यक्ति के रूप को विधा कहा जाता है। “विधा वह विधि है , जिससे साहित्यकार जीवन संबन्धी अपने अनुभव को वाणी देता है।”

यात्रा-साहित्य साहित्य की वह विधा है , जिसमें व्यक्ति अपने जीवन में की गयी किसी यात्रा का वर्णन करता है। मुक्त भाव से , अनुभूतियों को संजोता हुआ , देश-काल में फैले हुए अनंत जीवन में साँस लेते हुए , यात्री जो इतिवृत्त प्रस्तुत करता है , यात्रा-साहित्य कहलाता है। किसी यात्रा में जो दर्शनीय है , ग्रहणीय है , स्मरणीय है अथवा संवेदनीय है , उसका लिपिबद्ध रूप यात्रा-साहित्य है। यह यात्रा-साहित्य का सीमित अर्थ है। यात्रा-साहित्य एक गंभीर विधा है।

डॉ. मुरारीलाल शर्मा ने यात्रा-साहित्य के संबन्ध में कहा है कि, “जब कोई यात्री साहित्यिक मनोवृत्ति से प्रेरित होकर किसी विशिष्ट स्थान की यात्रा करता है और यात्रा से उत्पन्न अनुभवों को लिपिबद्ध कर देता है तब यात्रा-साहित्य की सृष्टि होती है।”

“किसी यात्रा का स्थूल विवरण मात्र प्रस्तुत करना यात्रा-साहित्य नहीं है। रचनाकार की संवेदना की अभिव्यक्ति ही तो यात्रा-साहित्य को श्द्रावल गैडश् से अलग करता है। साहित्यकार की यहीं अनुभूतियों का संवेदनशील वर्णन यात्रावृत्त को साहित्यिक बनाता है तथा जनमानस को

प्रभावित करने में सक्षम निकलता है। “प्रकृति-परिवेश-वातावरण के वर्णन , यायावर की संवेदनाएँ , प्रतिक्रियाएँ, अनुभूतियाँ और विचार यहाँ तक कि प्राप्त ज्ञान आदि का कल्पना तथा सृजनात्मक शक्ति तथा कलात्मक शैली से जो रसमय रचना लेखक प्रस्तुत करता है , वह रसमय यात्रावृत्त बनता है।”

यात्रा-साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है इतिहास , भूगोल का सही ज्ञान प्रदान करना। यात्री किसी देश की सड़कों से नहीं, वरन् प्रत्येक देश की आत्मा से गुजरकर संचार करता है। प्रत्येक देश की नस-नस को पहचानने की कोशिश यात्री करता है। अमुक देश के इतिहास , भूगोल, संस्कृति, राजनीति, नृत्तत्व शास्त्र आदि से यात्री का परिचय होता है, उसी को वह अपनी अनुभूतियों के साथ मिलाकर साहित्यिक रूप देता है। यात्रा-साहित्य ने लोक , कस्बाई, और नगर जीवन के सच को जहाँ एक ओर लिपिबद्ध किया है तो वहीं संस्कृति के अछूते आयामों को प्रकाशित किया है। रोमांचपूर्ण अनुभवों का यथार्थ रेखांकन, देशों की राज्य व्यवस्था और राजनीति का अंकन, धार्मिक-ऐतिहासिक स्थानों का चित्रण यात्रा-साहित्य में मिलता है। असल में यात्रा-साहित्य साँस्कृतिक आदान प्रदान का सशक्त औजार है।

यात्रा-साहित्य और इतिहास

यात्रा-साहित्य और इतिहास का गहरा संबन्ध है। यात्रा-साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है इतिहास का सही ज्ञान। इतिहास वास्तव में अतीत की स्मृतियाँ हैं। इन स्मृतियों का छान-बीन यात्रा-साहित्य का एक प्रमुख अंग है। यह इतिहास चित्रण मजबूरन नहीं स्वतः प्रत्येक यात्रा-साहित्य में प्रस्फुटित होता है। यात्री जिस देश का भ्रमण करता है पहले से ही उसके इतिहास का थोडा-बहुत ज्ञान अवश्य रखता है। अपनी यात्रा में यात्री इस ज्ञान को प्रत्यक्षतः देख-परखकर अपने ज्ञान को सुदृढ बनाता है। अतः यात्री प्रत्येक देश के ऐतिहासिक तत्वों का गवाह बनता है और अपने यात्रा साहित्य में ऐतिहासिक स्थल या स्मारक , महलों, किलों, खण्डहरों, ऐतिहासिक युद्ध, राजवंशों का इतिहास, महान व्यक्तियों का इतिहास ऐतिहासिक दन्थकथाएँ आदि को वाणी देता है। किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता के वर्तमान स्वरूप को जानने के लिए यह इतिहास चित्रण मूल्यवान रहता है।

यात्रा-साहित्य में इतिहास का चित्रण स्थूल तत्वों के रूप में नहीं वरन् उसे मानवीय संवेदना के साथ प्रस्तुत

करता है। अतः इतिहास को प्रस्तुत करते वक्त यात्रा-साहित्यकार की दृष्टि इतिहासकार की न होकर सर्जनात्मक साहित्यकार की रहती है। यात्रियों ने प्रत्येक देश के ऐतिहासिक संदर्भ एवं उसके पीछे छिपी मानवीय त्रासदियों पर भी प्रकाश डाला है।

उद्देश्य

1. यात्रा-साहित्य और इतिहास का अध्ययन करना ।
2. यात्रा-साहित्य और राजनीति का अध्ययन करना ।

यात्रा साहित्य: प्रमुख तत्व

यात्रा-साहित्य के निम्नलिखित तत्व माने जा सकते हैं - रचनाकार का व्यक्तित्व , विषय वस्तु , भाषा-शैली और उद्देश्य।

रचनाकार का व्यक्तित्व:

किसी भी रचना का सर्वप्रथम अधिकारी उसका लेखक होता है। लेखन के बाद वह रचना पाठकों का बन जाता है। रचना का विषय चाहे ऐतिहासिक हो या सामाजिक , काल्पनिक हो या यथार्थ , लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने ही अनुभूतियों , अनुभवों, विचारों, संवेदनाओं तथा प्रतिक्रियाओं को वाणी देता है।

विषय-वस्तु

यात्रा-साहित्य की विषय-वस्तु पूर्व निर्धारित नहीं होती। यात्रा लेखक अपनी वर्ण-वस्तु की परिकल्पना यात्रा के पूर्व नहीं कर सकता। यह यात्री के दृष्टिकोण पर आधारित है कि वह अपनी रचना में यात्रा के किन पक्षों को महत्व देता है और किन पक्षों को छोड़ता है। यात्रा-साहित्य की विषय वस्तु में केन्द्रीयता नहीं बल्कि बहुलता है। “संसार के छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कोई भी कार्य-व्यापार जीवन जगत का कोई भी पक्ष , उत्तरी ध्रुव से लेकर दक्षिणी ध्रुव तक विश्व का कोई भी क्षेत्र उसकी विषयवस्तु की परिधि में आ सकते हैं। यात्रा-साहित्य के विषय रूप में प्रमुख रूप से उभरनेवाले आयाम हैं - प्रकृति और भूगोल, संस्कृति, इतिहास, राजनैतिक-आर्थिक स्थितियाँ आदि।

प्रकृति और भूगोल

प्रकृति मानव के लिए सौन्दर्य का अखण्ड स्रोत रही है। प्रकृति की पुकार यात्रा के मूलभूत कारणों में से एक है। इस सन्दर्भ में धर्मवीर भारती का यह कथन देखिए “सच तो यह है कि , सिर्फ बर्फ को निकट से देख पाने के लिए हम लोग कौसानी गये थे। अतः यात्री किस भू-भाग की यात्रा करता है , उसका स्वरूप, संरचना, सौन्दर्य आदि को परखता है और उसे पाठकों से संवादित कराता है। अतः यात्रा साहित्य में कहीं हिमाच्छादित श्रृंखलाएँ और पर्वत , कहीं सागर और झील-झरने , कहीं विशाल मरुस्थल कहीं बीहड जंगल प्रतिबिम्बित होता है।

राजनैतिक-आर्थिक स्थितियाँ

यात्रा-साहित्य के विषय के रूप में देश की राजनैतिक एवं आर्थिक स्थितियों को देखा जा सकता है। इसमें सत्ता का स्वरूप , चुनाव-प्रक्रिया, न्याय व्यवस्था , आर्थिक नीति, बाजार व्यवस्था आदि का विश्लेषण होता है। यहाँ लेखक का उद्देश्य राजनीति एवं अर्थ व्यवस्था का विवेचन करना नहीं बल्कि सामाजिक स्थिति को दर्शाना है। सत्ता पर जनता का प्रभाव और जनता पर सत्ता का प्रभाव किस प्रकार है , यह दिखाना लेखक का मंशा रहता है।

भाषा-शैली

यात्रा-साहित्य का महत्वपूर्ण तत्व है भाषा-शैली। भाषा एवं शैली ही रचना को प्रभावशाली बनाता है। यात्रा-साहित्य एक ऐसी विधा है , जिसमें आँखों की प्रधानता है। लेखक जो कुछ देखता है उसे लिपिबद्ध करता है। तब लेखक को ऐसी भाषा एवं शैली का इस्तेमाल करना चाहिए जिससे पाठक भी उसे बंद आँखों से देख सकें। यात्रा-साहित्य की भाषा सरल एवं सजीव होता है। इसमें कलात्मकता-काव्यात्मकता, चित्रात्मकता आदि निहित है। यात्रा साहित्य का उद्देश्य बहु आयामी है। स्वान्तः सुखाया होकर भी वह लोक कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में विश्वग्राम की संकल्पना के समय यात्रा-साहित्य श्वसुधैव कुटुम्बकमश् की भावना को उजागर करता है। उसमें व्यष्टि से समष्टि तक जीवन के अनेक रूप एकसाथ मुखर होते हैं। पाठकों को मनोरंजित करने के साथ-साथ सूचनाएँ प्रदान करने का उद्देश्य भी यात्रा-साहित्य निभाता है, यहीं नहीं पाठकों के मन में यात्रा करने की प्रबल इच्छा भी जगाता है।

शोध की क्रियाविधि

यह यात्रा वृत्तांत साहित्य में राजनीति दल के महत्त्व पर भी चर्चा की गई है यात्रा साहित्य की एक विधा का सम्बन्ध राजनीति से भी लिए गया है जिसका पर विभिन्न यात्रियों ने प्रकाश डाला है राजनीति का अर्थ किसी नेता के हाथ निर्णय लेने की ताकत से नहीं है। राजनीति के अन्तर्गत विभिन्न दलों, नेताओं, मतदाता विभिन्न आन्दोलन आदि आता है। राजनीति का परम लक्ष्य समाज का कल्याण है। जब राजनीति एक व्यक्ति में या एक शासक में सीमित होता है तब तनाव पैदा होता है समाज में संघर्ष शुरू होता राजनीति वास्तव में राज्य प्रशासन की नीति है। राजनीति परिवर्तन का जरिया है। राजनैतिक गतिविधियों से विभिन्न देशों में परिवर्तन लाया गया है और आगे भी लाया जा सकता है। राज्य प्रशासन को सुगम बनाने के लिए ही संविधान, कानून, सेना, दण्डव्यवस्था आदि को लागू किया गया है।

सहायक डेटा

माध्यमिक डेटा विभिन्न संसाधनों जैसे पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम से संचित किया जाता है।

शोध का विश्लेषण

यात्रा-साहित्य और राजनीति

राज्य की संचालन करनेवाली राजनैतिक स्थितियों से यात्रा-साहित्य अछूता नहीं है। सत्ता और शासन व्यवस्था के बिना राज्य की छवि अपूर्ण है। इसलिए यात्री की दृष्टि सत्ता का स्वरूप, विभिन्न दलीय स्थिति, चुनाव प्रक्रिया, न्याय व्यवस्था आदि पर भी जाती है। तत्कालीन राज्य-प्रशासन से संबन्धित छोटी-बड़ी बातों पर यात्री का निगाह पडता है। सत्ता पर जनता का प्रभाव, व्यवस्था के प्रति जनता की आस्था या विरोध, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन या सन्धियाँ, राजनीतिक युद्ध आदि का चित्रण यात्रा-साहित्य में उपलब्ध हैं। प्रत्येक देश के प्रसिद्ध नेताओं तथा महनीय एवं घृणीय प्रवृत्तियों का भी इसमें परिचय होता है।

अतः शासन व्यवस्था राज्य का अभिभूत तत्व है। उसके तत्वों का विवेचन-विश्लेषण यात्रा-साहित्य में उपलब्ध है। यात्रा-साहित्य में जिस राजनीति का चित्रण होता है वह वास्तव में उस देश की राजनीति का इतिहास बनता है। जैसे कि राजनीति एक सतत् प्रक्रिया है, उसमें बदलाव

अवश्य आता रहता है। शासक बदलता है, कानून में संवर्धन होता है, प्रत्येक दल के प्रति जनता की अभिरुची बदलती है, युद्ध समाप्त होता है। तब यात्रा के समय जिन राजनैतिक गतिविधियों का चित्रण यात्रा-साहित्यकार करता है सालों बाद वह उस देश की राजनीति का इतिहास बन बैठता है। अब उस देश की राजनीति काफी आगे आ चुका होगा। अतः यात्रा-साहित्य में जिस राजनीति का चित्र है वह सचमुच राजनीतिक इतिहास बन जाता है।

राजनैतिक दल या पार्टी

सामान्य शब्दों में आदमी जिस माध्यम से नेता बनता है, उसे दल या पार्टी कहलाता है। अर्थात् कुछ लोग तथा लोगों का समूह, शासन करने के लिए जो पद्धति अपनाता है या संगठित होता है, वही संगठन दल या पार्टी कहलाता है। प्रत्येक दलों का अपना एक सिद्धान्त होता है जो प्रायः लिखित दस्तावेज के रूप में प्राप्त है। विभिन्न देशों में राजनैतिक दलों की अलग अलग स्थिति व व्यवस्था है।

कुछ देशों में कोई भी राजनीतिक दल नहीं होता, कुछ में एक ही दल होता है, कहीं मुख्य दो दल होते हैं, किन्तु बहुत से देशों में दो से अधिक दल होते हैं। राजनीतिक दल का प्राथमिक उद्देश्य राजनैतिक नेतृत्व की प्राप्ति होती है। राजनैतिक दलों का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं हैं। उनकी उत्पत्ति उन्नीसवीं सदी में हुई है। आधुनिक काल में राजनैतिक दलों का गठन विविध आचारों पर किया गया है। राजनीतिक दलों के निर्माण में धर्म की अहम भूमिका है। इसके अलावा क्षेत्रीयता अथवा प्रादेशिकता को आधार बनाकर एवं आर्थिक या वर्गीय (किसान, मजदूर वर्ग) वर्तमान समय में जातीय आधार पर भी राजनैतिक दलों का संगठन होता आ रहा है। जो दल अधिकार में आता है, उसकी सरकार बनती है।

इस प्रकार राजनीति में दल का महत्त्व बहुत बड़ा है। कहीं-कहीं इन दलों से जनता तृप्त होती है, कभी-कभी इन दलों से असहमत। हिन्दी की स्त्री यात्रियों ने कुछ-कुछ ऐसे दलों एवं उसकी स्थिति पर अपने यात्रा साहित्य में प्रकाश डाला है।

राजनेता

नेता का अर्थ है नेतृत्व करनेवाला तब राजनेता का अर्थ बनता है राज का याने शासन को नेतृत्व करनेवाला। यह कोई पूर्व निर्धारित व्यक्ति नहीं होता। जो व्यक्ति

राजनीति के द्वारा जनता की सेवा करने आगे आता है , उसे राजनेता कहलाता है। राजनेता को वास्तव में स्वार्थ लाभ से परे होकर समाज के लिए काम करना चाहिए , लेकिन ऐसे राजनेता भी कम नहीं हैं , जो अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए प्रवृत्त हैं। विश्व राजनीति में ऐसे कई अच्छे एवं बुरे शासक रहे हैं , रहते हैं और रहेंगे। स्त्री यात्रा-साहित्य में कुछ ऐसे नेतागणों का जिक्र हुआ है।

चुनाव व्यवस्था

लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है चुनाव या निर्वाचन जिसके द्वारा जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। चुनाव एक लंबी एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जो निश्चित समय के अंतराल में होता रहता है। कभी-कभी निश्चित समय के अलावा आपतकालीन समय में भी चुनाव का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक देश को चुनाव प्रक्रिया में अंतर होता है।

‘लहरों की लयश् में लेखिका रमणिका गुप्ता ने क्यूबा की चुनाव व्यवस्था पर थोड़ा प्रकाश डाला है। क्यूबा में भी सीधा तथा गुप्त मतदान की प्रणाली है। हर पाँच साल में चुनाव होता है। चुनाव से गठित संसद को श्नेशनल एसेम्बली ऑफ पॉवरश् (संसद) कहते हैं। राज्य काउंसिल का चुनाव भी इसके साथ होता है। राज्य काउंसिल वह है जो मन्त्री परिषद तथा सुप्रीम कोर्ट के सदस्य को नियुक्त करती है। यहीं नहीं क्यूबा में राज्य काउंसिल कानून बनाने की सर्वोच्च संस्था है। इसका अध्यक्ष राज्य तथा राज्य सरकार का अध्यक्ष भी होता है।

कृष्णा सोबती ने अपना यात्रावृत्त श्बुद्ध का कमण्डल लद्दाखश् में सन् 1752 के लद्दाख की एक चुनाव प्रक्रिया का जिक्र किया है। लद्दाख में राजसी शासन का होते हुए भी प्रजाओं का विश्वास शासन में पंचायत की भागीदारी में था। इसलिए नीमा नमगियाल के काल में , राज्य परिवार के झगडे सुलझने के लिए समांतर रूप से एक समिति का भी चुनाव किया जाता था। राज्य परिवार और प्रजाओं की ओर से चुने गए समिति के सदस्यों की संख्या इस प्रकार है “राजसी परिवार 9 सदस्य, पुरोग के 8 सदस्य, मंत्रि और लेनपे 50, पंचायतों के सरपंच 4, गोम्पाओं की लाभा 10, ल्हासा का प्रतिनिधि-1, कश्मीर के ऊन और पश्मीना व्यापारी 6। इस समिति के कुल 88 सदस्योंगण और समिति के मुख्य वरिष्ठ लामा।श्

दण्ड व्यवस्था

राजनीति के प्रयोग का एक ओर साधन है कानून। किसी भी देश में कानून का पालन वहाँ की जनता करती है। कानून की अवमानना के लिए दण्ड का प्रारूप रखा गया है। कानून मनुष्य द्वारा बनाया गया है। जनता को तकलीफ देने के लिए नहीं वरन् समाज व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए कानून व्यवस्था सहायक होती है। कानून या दण्ड व्यवस्था सभी लोगों के लिए एक समान है। कानून या दण्ड व्यवस्था को लागू करते समय किसी भी प्रकार का भेदभाव असंगत है।

शिशवानीश् ने अपना यात्रावृत्त श्यात्रिकश् में रूस की दण्ड व्यवस्था का जिक्र किया है। लेखिका के अनुसार रूस में अपराध बहुत कम होते हैं , शायद इसलिए कि यहाँ की दण्ड व्यवस्था सबके लिए एक सी है। रूस की दण्ड व्यवस्था का एक नमूना लेखिका प्रस्तुत करती हैं - “अपराधी शराब के नशे में कार चला रहा था , उसी नशे की झोंक में उसने सामने आ रही एक-दूसरी कार को टक्कर मारी जिसके चालक को गंभीर चोट आई थी। नशेडी अपराधी को एक वर्ष का कारावास तो मिला ही साथ ही पूरे पाँच वर्ष के लिए उसका लाइसेंस जब्त कर लिया।श् लेखिका इस संदर्भ में भारतीय कानूनी व्यवस्था पर यह आरोप लगाती हैं और वह सच भी है कि यदि कोई मंत्रि पुत्र ने कार भिडावा दी तो , एक ही ऊँची सिफारिश से वह दण्ड से मुक्त हो जाता है। अतः भारत के संदर्भ में यह सच है कि अक्सर राजनैतिक पहुँचवाले हमेशा बच जाते हैं।

उपसंहार

इतिहास, राजनीति एवं अर्थ यात्रा साहित्य में पात्रों के समान आता जाता रहता है। कहानी और उपन्यास के पात्र जिस प्रकार कथा को आगे बढ़ाते हैं उसी प्रकार इतिहास, राजनीति एवं अर्थ यात्रा-साहित्य को एक प्रवाह देता है। हिन्दी के स्त्री यात्रा-साहित्यकारों के यात्रा-साहित्य के विश्लेषण से हमें यही ज्ञात होता है कि इन लेखिकाओं ने प्रत्येक यात्रा-स्थान के ऐतिहासिक , राजनैतिक, आर्थिक झोंकियों को कहने के लिए कहा नहीं गया है। अतः जान बूझकर इसका चित्रण करना स्त्री यात्रियों का लक्ष्य नहीं रहा है। यात्री की अपनी रुचि हम इनके यात्रा-साहित्य में देख सकते हैं। कुसुम अंसल ने अपनी यात्रा में इतिहास की ओर रुचि रखा है तो नासिरा शर्मा ने पूरे यात्रावृत्त में ईरान , ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि की राजनीतिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। वहीं रमणिका

गुप्ता ने प्रत्येक देश की आर्थिक संरचना एवं मजदूरों की स्थिति पर बल दिया है। इस प्रकार राजनीति में दल का महत्व बहुत बड़ा है। कहीं-कहीं इन दलों से जनता तृप्त होती है, कभी-कभी इन दलों से असहमत। हिन्दी की स्त्री यात्रियों ने कुछ-कुछ ऐसे दलों एवं उसकी स्थिति पर अपने यात्रा साहित्य में प्रकाश डाला है।

संदर्भ सूची

1. मुरारीलाल शर्मा - हिन्दी यात्रा-साहित्य: स्वरूप और विकास, पृ. 38
2. डॉ. सुरेन्द्र माथुर - यात्रा-साहित्य का उद्भव और विकास, पृ. 94
3. डॉ. सुरेन्द्र माथुर - यात्रा-साहित्य का उद्भव और विकास, पृ. 96
4. अजेय - अरे, यायावर रहेगा याद, पृ. 4 अजेय - एक बूढ़ सहसा उछली, पृ. 20
5. बापुराव देसाई - यात्रा साहित्य विधा: शास्त्र और इतिहास, पृ. 52
6. डॉ. रेखा प्रवीण उप्रेती - हिन्दी का यात्रा-साहित्य (1960 से 1990 तक) पृ. 5
7. श्री. नगेन्द्रनाथ बसु - हिन्दी विश्वकोश, 18 वाँ भाग, पृ. 630
8. डॉ. गोविन्द चातक - आधुनिक हिन्दी शब्दकोष पृ. 1445
9. कौलाश-मानसरोवर एक अन्तर्यात्रा गगन गिल वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, द्वि. सं. 2009
10. विश्वमोहन तिवारी - हिन्दी का यात्रा साहित्यरू एक विहंगम दृष्टि, पृ. 15

Corresponding Author

Kusum Lata*

Research Scholar, Sunrise University